"स्पिरुलिना बायोमास उत्पादन और उपयोग के लिए तकनीकी जानकारी" पर अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम

बैच (3): 5 -10 दिसंबर, 2022; 26-31 दिसंबर, 2022; एवं 16-21 जनवरी,

प्रतिवेदन

भाकृअनुप - के मा शि सं , मुंबई , मुंबई में दिसंबर, 2022 से जनवरी 2023 के दौरान निर्धारित तीन बैचों में "स्पिरुलिना बायोमास उत्पादन और उपयोग के लिए तकनीकी जानकारी" पर अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम के तीन बैच आयोजित किए गए । 5 -10 दिसंबर, 2022; 26-31 दिसंबर, 2022 और 16-21 जनवरी, 2023। प्रशिक्षण को स्पायरुलीना बायोमास संवर्धन और मूल्य वर्धित यौगिकों के उपयोग पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया । भारत के विभिन्न भागों से (महाराष्ट्र- 16, गुजरात- 3, तेलंगाना- 3, कर्नाटक- 2, आंध्र प्रदेश- 1, मध्य प्रदेश- 1, उत्तर प्रदेश- 1 और पश्चिम बंगाल) से 21 पुरुषों और 7 महिलाओं सहित कुल 28 प्रतिभागी - 1)ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। एक गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत बुनियादी सैद्धांतिक ज्ञान और हैंड ऑन ट्रेनिंग से व्यावहारिक गतिविधियों को प्रदान किया गया

AEHM डिवीजन, ICAR-CIFE के जलीय पर्यावरण प्रबंधन विभाग के विशेषज्ञों की देखरेख में हुई । व्यावहारिक कक्षाएं, स्पिरुलिना पर प्रकाश, माइक्रोस्कोपी अध्ययन, मीडिया तैयारी (ज़ारूक का माध्यम और सीआईएफई माध्यम), इनडोर और आउटडोर इकाइयों में मदर कल्चर का टीकाकरण, पानी की गुणवत्ता के मापदंडों का अनुमान, स्पिरुलिना की बैच कल्चर तकनीक पर केंद्रित थीं।

खेती, पेक्ट्रोफोटोमेट्रिक विधियों (मैलापन, विशिष्ट विकास दर, दोहरीकरण समय), सेकची डिस्क, क्लोरोफिल अनुमान, सेल / फिलामेंट गिनती का उपयोग करके विकास माप के लिए तकनीकें (सेडगविक - काउंटिंग स्लाइड के बाद), पिगमेंट आकलन के लिए तकनीक, बायोमास शुद्धता (टीपीसी विधि) के मूल्यांकन के लिए सूक्ष्मजीवविज्ञानी तकनीक, प्रोटीन आकलन तकनीक, सुखाने के तरीके (मैकेनिकल, स्प्रे और फ्रीज सुखाने), फाइकोसायनिन की एकाग्रता और शुद्धता का निष्कर्षण और अनुमान , बायोमास का सीएचएनएस विश्लेषण, आदि। इसके अलावा, सीआईएफई में प्रशिक्षुओं का दौरा प्रशिक्षुओं को चल रहे शोध और सुविधाओं से परिचित कराने के लिए प्रयोगशालाओं, पुस्तकालय, वेटलैब् और अन्य सुविधाओं की व्यवस्था की गई थी। प्रशिक्षण के दौरान शामिल किए गए सभी सैद्धांतिक और व्यावहारिक व्याख्यानों को शामिल करते हुए एक प्रशिक्षण मैनुअल तैयार किया गया था। प्रशिक्षुओं द्वारा दिए गए फीडबैक से पता चला कि प्रशिक्षण कार्यक्रम ने विषय से संबंधित उनके ज्ञान में काफी सुधार किया है। प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन डॉ. एस.पी. शुक्ला (पाठ्यक्रम निदेशक), डॉ. कुंदन कुमार एवं डॉ. सौरव कुमार (पाठ्यक्रम समन्वयक) द्वारा किया गया। डॉ. रविशंकर सी.एन., निदेशक और कुलपति, आईसीएआरसीआईएफई, मुंबई ने प्रशिक्षुओं के साथ बातचीत करते हुए इस बात पर जोर दिया कि प्रशिक्षुओं को नए उद्यमशीलता, खेती के उद्यम और अनुसंधान कार्यक्रमों को शुरू करने के लिए प्रशिक्षण के दौरान ज्ञान और

तकनीक सीखकर निष्पादित करना चाहिए। इस प्रकार के प्रशिक्षण पर प्रतिभागियों ने उच्च स्तर की संतुष्टि व्यक्त की और स्पायरुलीना उत्पादन और उपयोग के एक विशिष्ट विषय पर इस तरह के एक समीचीन प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन के लिए पाठ्यक्रम निदेशक और समन्वयकों के प्रयासों की सराहना की।